श्यामा

षष्ठम् संस्करण

सत्र – 2020–21

कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट

देवरी रोड भाटापारा

(संचालित– श्री रामनारायण शिक्षण समिति)

www.kksit.co.in gmail-kksibhatapara@gmail.com

सत्र – 2020–21 षष्ठम संस्करण

श्यामा

कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट, भाटापारा

(संचालित द्वारा- श्री रामनारायण शिक्षण समिति)

www.kksit.co.in gmail- kksibhatapara@gmail.com

(स्व.पं.रामनारायण बृजभूषणलालजी शुक्ला)

(स्व.पं.कमलाकांत रामनारायणजी शुक्ला)

(स्नेहमयी माता श्रीमति श्यामादेवी शुक्ला)

प्रबंधन समिति सदस्य

(श्री रामनारायण शिक्षण संस्थान)

(श्री मनीष शुक्ला जी, अध्यक्ष)

(श्रीमति श्यामा देवी शुक्ला जी, उपाध्यक्ष)

(श्रीमति अंजली शुक्लाजी,सचिव)

(श्रीमति रेणु शाह, संयुक्त सचिव)

(अन्य सदस्य :– राकेश गुप्ता, बंसत मिश्रा, दिनेश मिश्रा)

शिवरतन शर्मा

विधायक

छत्तीसगढ़ विधानसभा (भाटापारा)

प्रवक्ता, भारतीय जनता पार्टी – छत्तीसगढ़

अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ खनिज विकास निगम

निवास :
सुभाष वार्ड, भाटापारा
जिला बलौदाबाजार–भाटापारा (छ.ग.) पिन 493 118
मो. – 94252 06885, 98261 06885

e-mail : shivratansharma.bjp@gmail.com

अर्ध शास. पत्र क्र. 43/20 /अ.वि.स.

भाटापारा, दिनांक 15/01/2020

शुभकामना संदेश

हार्दिक प्रसन्नता का विषय है कि कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यट, देवरी रोड़ भाटापारा जिला–बलौदाबाजार–भाटापारा द्वारा वार्षिक पत्रिका ''श्यामा'' के षष्ठम संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के माध्यम से सत्र में विद्यार्थियों द्वारा आयोजित एवं प्राध्यापकों द्वारा संपन्न कौशल एवं कियाकलाप की जानकारीयों से परिचित होने का अवसर अभिभावकों एवं जनसामान्य को प्राप्त हो सकेगा। श्यामा पत्रिका के प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्री शिवरतन शर्मा
विधायक
विधानसभा क्षेत्र भाटापारा

कार्यालय – जिला शिक्षा अधिकारी
जिला– बलौदाबाजार–भाटापारा (छ.ग.)
E-mail ID:- deobalodabazar12@gmail.com

क्रमांक / विविध / 2020 / 277 दिनांक – 13 / 1 / 2020

शुभकामना संदेश

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि, संस्था कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट देवरी रोड, भाटापारा जिला –बलौदा बाजार, द्वारा वार्षिक पत्रिका **"श्यामा"** के षष्ठम् संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसके माध्यम से संस्था के विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति एवं सह–क्रियाकलापों का परिचय शिक्षा जगत को प्राप्त हो सके।

पत्रिका के प्रकाशन मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(आर.के.वर्मा) 13.01.2020

जिला शिक्षा अधिकारी
बलौदाबाजार–भाटापारा (छ.ग.)

'अध्यक्ष की कलम से ....."

जिस प्रकार सूर्य अपनी किरणों से अंधकार को चीर कर अपने प्रकाश को चारों ओर फैलाता है व नया सवेरा प्रगति की नई राह दिखाता है , ठीक उसी कम में कमलाकांत शुक्ल इंस्टीट्यूट भी शिक्षा के प्रकाश को लिए हुए प्रगति पथ पर अनवरत अग्रसर है । जिस प्रकार प्रकृति की छटा (सुदंरता) पल–पल रंग बदलती है वैसे ही संस्थान का मुखिया होने के नाते विद्यार्थीओं एंव शिक्षको को अभिप्रेरित कर उन्हे प्रगति पथ की वसुधार में बनाऐ रखने के लिए अपने गुरूत्तर दायित्व से मै कभी भी विमुख नही हो सकता । मेरा हमेशा से ही सतत प्रयत्न रहा है कि संस्थान में विद्यार्थीओं को नऐ–नऐ अवसर प्रदान किऐ जाए ताकि भविष्य मे आने वाली चुनौतियों को पार कर अपने जीविकोपार्जन करते हुए एक सुखमय जीवनयापन करते हुए , देश के भावी नागरिक बन अपने परिवार, समाज, व देश के सुयोग्य नागरिक के रूप मे स्वयं की पहचान बना सकें।

" अब जरूरी हो गया है वक्त के साथ बदलना नई सोच और सकारात्मक तरीकों से नई सोच और नई तकनीक को एक सही दिशा दिखाना । मुझे यकीन है कि कमलाकांत शुक्ल इंस्टीट्यूट प्रगति के पथ पर अग्रसर है और आने वाले वर्षों मे शिखर की उचांइयों को प्राप्त करने का प्रयास सदैव जारी रहेगा । व प्रशिक्षाणर्थि इस वार्षिक पत्रिका " श्यामा " के माध्यम से अपनी छवि को प्रज्जवलित कर सकेंगे ।

हम उन सभी के आभारी है जिन्होने इस संस्थान को नई दिशा एवं सरंचना प्रदान करने में अपना सहयोग व योगदान दिया है

"कमलाकांत शुक्ल इंस्टीट्यूट" संस्थान की प्रगति के लिए आपके नव–परिवर्तनशील विचारो एवं सुझावो का हार्दिक स्वागत करता है

Manish Shukla

संचालक
श्री मनीष शुक्ला जी
रामनारायण शिक्षण संस्थान,भाटापारा

**उपाध्यक्ष की कलम से ....."

आज ऐसी शिक्षा की आवश्कता है , जो पूरे समाज और देश में नैतिकता उत्पन्न कर सके। यह नैतिकता नैतिक शिक्षा के द्वारा ही उत्पन्न की जा सकती है। चूँकि संस्कृत में नय धातू का अर्थ है जाना, ले जाना तथा रक्षा करना । इसी से सब्द नीति बना है । इसका अर्थ होता है ऐसा व्यवहार, जिसके अनुसार अथवा जिसका अनुकरण करने से सबकी रक्षा हो सके । अतः हम कह सकते हैं कि नैतिकता वह गुन है, और नैतिक शिक्षा वह शिक्षा है, जो कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति सम्पूर्ण समाज तथा देश का हित कर करती है।

शिक्षा के बिना मनुष्य का जीवन अंधकार मय ओर दिशविहीन हो जाता है शिक्षा ही जीवन का आधार है हि शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपने जीवन को अग्रसर करता है सही ऑर गलत मे अंतर कर सकते है अगर बच्चो को उच शिक्षा एवं संस्कारिक शिक्षा दी जाए तो बच्चे आगे चलकर अपने परिवार के साथ साथ देश एव राष्ट्रहित मे अपना महत्वपूर्ण योगदान देगा ओर देश को विकास के रास्ते मे ले जा सकते है अपने जीवन मे हमेशा अछे कार्य करते हुवे परिवार राज्य, देश एवं राष्ट्र सेवा करनी चाहिए हम बदलेंगे युग बदलेगा के तर्ज पर अपनी सेवा भावना लोगो तक पहुचनी चाहिये !!

Shyama Shukla

उपाध्यक्ष

श्रीमती श्यामा शुक्ला जी

रामनारायण शिक्षण संस्थान,भाटापारा

**सचिव की कलम से ....."

शिक्षा हमारे जीवन की सफलता का मूल आधार है, मतलब साफ है कि शिक्षा के बिना कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में ज्ञान अर्जित नहीं कर सकता है, और न कभी सफल हो सकता है। शिक्षा न सिर्फ मनुष्य के अंदर हर विषय के बारे में जानने और चीजों को सीखने–समझने की क्षमता विकसित करती है, बल्कि मनुष्य के शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रुप से भी विकास करने में उसकी मदद करती है।

एक शिक्षित व्यक्ति के अंदर आत्मविश्वास कूट–कूट कर भरा होता है, इसलिए वह हमेशा ही अपने जीवन में आगे बढ़ने के बारे में सोचता रहता है, साथ ही ऐसे व्यक्ति की अपने जीवन के प्रति हमेशा से ही सकरात्मक सोच रहती है, क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति का दिमाग विकसित होता है, और उसे सही दिशा में आगे बढ़ने और अपने जीवन के लक्ष्यों को हासिल करने में मदद मिलती है, अर्थात मनुष्य के जीवन में शिक्षा ही खुशी पाने का एकमात्र माध्यम है। इस वार्षिक पत्रिका "श्यामा" षष्ठम संस्करण के प्रकाशन से विद्यार्थियों के कौशल तथा व्यवहारिक जीवन में नैतिकता प्रदान करनें में महाविद्यालय पत्रिका असीम योगदान प्रदान करे। इसी शुभेच्छा के साथ अभिवादन !

Anjali Shukla

सचिव
श्रीमती अंजली शुक्ला जी
रामनारायण शिक्षण संस्थान, भाटापारा

प्राचार्य की कलम से.....

कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट के 8 वे वर्ष मे पादोर्पन होने को आ रहा है उन्होने इस ग्रामीण अंचल मे गुणवत्ता वाली शिक्षा के लिए अपना हार्दिक सहयोग दिया है जो की शिक्षा के मूलभूत सिद्धांतों को कार्यारूपमे परिवर्तित करने के लिए एक प्रशसनीय योगदान है वर्तमान मे शैक्षणिकजगत के समक्ष जो गहन समस्या सर्वत्र विधमन प्रतीत होती है वह है विधारथियों मे अपने स्तर के अनुरूप समकक्ष ज्ञान का न होना सामान्य तौर पर देखा जा रहा है उनका सम्पूर्ण व्यक्तितव विकास एवं कौशल पूर्ण नैतिक विकास मे दिन पर दिन गिरावट आ रही है

शैक्षणिक प्रवीनता के साथ जीवन मे सभी महत्वपूर्ण कौशलों के विकास को दृष्टगत रखते हुवे छात्रों मे अनुशासन सदाचार ओर सद्भावना विकसा पर विशेष बल दिया जा रहा है

छात्रों व्यवसायिक कौशलों मे निपुणता हेतु कार्य शालाओ , कम्प्युटर प्रशिक्षण , योग प्रशिक्षण , व्यायाम, खेलकुद , अग्नि सुरक्षा से संबन्धित राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किए जा रहे है छात्रों को शिक्षा मे आ रहे बदलाव एवं हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री जी नरेंद्र मोदी जी के द्वारा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 के लागू करने दे प्रस्ताव से भी छात्रो एवं प्राध्यापकों को अवगत कराया जा रहा है।

आशा है हमारी संस्था भविष्य मे भी इसी लगन के साथ छात्रों के उत्तरोतर विकास मे सदा कार्यरत रहेगी ! जिससे एक परिवार का ही नहीं एक प्रदेश का ही नहीं एक समाज का नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र का विकास होगा

प्राचार्य
PRINCIPAL
कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट
KAMLAKANT SHUKLA INSTITUTE
देवरी रोड भाटापारा
BHATAPARA (C.G.)

संपादक की कलम से.....

ऐसा अनुभव ना करे कि आपके कंधो पर बोझ है यहॉ कार्य परमात्मा की बंदगी की तरह होना चाहिऐ । शिराओं में शक्ति दें तेजस्विता दें ए ताकि आप अपने देश समाज ,संस्कृति की सेवा कर सके । इन्ही भावों के साथ आपके स्नेह सिंचित हाथों में इंस्टीट्यूट पत्रिका "श्यामा" का षष्ठम अंक समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्न्ता हो रही है पत्रिका का अंक आपके स्नेह , सहयोग एंव आशीष से यह रूप पा सका है

पत्रिका "श्यामा" का एकमात्र उद्देश्य विद्यार्थीयों मे छिपी प्रतिभा को विकसित करके उन्हे लेखन मंच प्रदान कर साहित्य सृजन की ओर प्रेरित करना है मन की अनुकूलता हो या प्रतिकुलता जिनकी ध्येय पर दृष्टि होती

है वे व्यक्ति अपने कार्य में अवश्य सफल होते है । किसी भी देश की प्रगति का एकमात्र आधार विद्यार्थी ही होता है यदि हम जीवन में प्रगति के पथ पर अग्रसर होना चाहते है तो हमें अधिक से अधिक चिंतन , मनन और अध्ययन कतना होगा

हमारे अन्दर जितना अधिक प्रबल , आत्मविश्वास , मनोबल और कुछ कर दिखाने का जज्बा होगा हम उतना ही अपने भाग्य का निर्माण कर सकेंगे और मानव जीवन को सार्थक कर सकेगे

विद्यार्थीयों अपनी मौखिक प्रतिभा को सुन्दर भावों की शब्दमाला में परोकर सजाने का प्रयास किया है छात्र अध्ययन एवं लेखन में रूचि बढाये । इन्ही आशओं के साथ .....

प्राचार्य
PRINCIPAL
कमलाकांत शुक्ला इंस्टीटयूट
KAMLAKANT SHUKLA INSTITUTE
दवरी रोड भाटापारा
BHATAPARA (C.G.)

श्यामा

संपादक मंडल

डॉ. वंदना चौहान , पुर्णिमा कौशिक , भावना हेंवार

नेहा सिंह , अनुपमा उमरें, वैभव गुप्ता

डिजाइनिंग एवं कम्पोजिशन

हिमांशु बाजपयी , अब्दुल कादिर ,गुलशन कुमार

गेंदलें , मोरजध्वज जायसवाल राकेश बघेल

छात्र संपादक

सरोजनी वर्मा , गुपेश्वर , धारिका , मुकेश , रितेश

कमलेश ,

टंकन एंव ग्राफिक्स

गौकरण यादव , ठाकुर राम ध्रुव

पाठ्यक्रम–

1. बी.एड
2. पीजीडीसीए
3. बी.कॉम
4. डीसीए

देवरी

कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट

वार्षिकोत्सव समारोह

संगोष्ठी... 'दृष्टि' पत्रिका का विमोचन कर शिक्षा नीतियों में बदलाव की जानकारी दी

भाटापारा| कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट देवरी में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2019 में लागू होने वाले विषयों पर चर्चा की गई। दो दिवसीय संगोष्ठी में पं. रविशंकर शुक्ल यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार डॉ. गिरीश कांत पांडे ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को विस्तार से समझाया। महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए शिक्षा नीतियों में बदलाव और सुझाव के बारे में उपस्थित छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों को जानकारी दी। उन्होंने शिक्षा की गुणवत्ता पर विशेष जोर देने की बात कही। संस्था के संचालक मनीष शुक्ला ने कहा कि आज के समय में सभी के लिए शिक्षा जरूरी है। शिक्षा देना और शिक्षा लेना दोनों अपने आप में महान कार्य है। इसमें हर व्यक्ति को आगे आकर सहयोग करना चाहिए। संगोष्ठी के अंतर्गत सार संक्षेपिका 'दृष्टि' पत्रिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में विशेष अतिथि डॉ. कमलनारायण गजपाल, संचालक मनीष शुक्ला, सचिव अंजली शुक्ला, प्राचार्य डॉ. वंदना चौहान, संयोजक पूर्णिमा कौशिक, सह संयोजक अब्दुल सत्तार, भागवत प्रसाद, स्मृति सिंह, वैभव गुप्ता, भावना हेंवार, नेहा सिंह, सुषमा दुबे, मनीषा साहू, अनुपमा उमरे आदि उपस्थित रहे। धन्यवाद ज्ञापन पूर्णिमा कौशिक और संचालन अमीना खानानी ने किया।

मदद... 14 सरकारी स्कूलों को दरी बांटी गई

भाटापारा| कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट के सहायक प्राध्यापकों ने 14 सरकारी स्कूलों में दरी भेंट किया। इसके लिए प्राचार्यों ने संस्था संचालक मनीष शुक्ला एवं प्राचार्य डॉ. वंदना चौहान का आभार जताया। कार्यक्रम में सहायक प्राध्यापक पूर्णिमा कौशिक, भावना हेंवार, स्मृति सिंह, भागवत मिश्रा, पुष्पा यादव, नेहा सिंह, मनीषा साहू, अनुपमा उमरे एवं समस्त समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

• 18 ... 2019 6

गांधी शिक्षा दर्शन पर डॉ योगिता का व्याख्यान

किताबी ज्ञान के व्यावहारिक प्रयोग को जीवन में उतारने का प्रयास है शिक्षा : डॉ. योगिता

गांधी शिक्षा दर्शन व्याख्यान

भाटापारा @ पत्रिका. कमलाकांत ग्रुप आफ इंस्टिट्यूट में मोहन वश फाउंडेशन की ओर से गांधी के शिक्षा दर्शन 'सा विद्या या विमुक्तये' व्याख्यान हुआ। इसमें चीफ एक्सपर्ट डॉ. योगिता बाजपेयी ने महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को शिक्षा के बुनियादी सिद्धांत पर प्रकाश डालते हुए बताया कि जब तक शिक्षा जीवन के मूलभूत आधार अर्थात रोटी, कपड़ा और मकान की आवश्यकता पर खरा नहीं उतरती उसकी पूर्णता साबित नहीं होती।

शिक्षा की गुणवत्ता उसके समग्र आयाम को लेकर चलने में ही है। केवल किताबी ज्ञान ही शिक्षा नहीं वरन उसके व्यावहारिक प्रयोग को जीवन में उतारने का प्रयास शिक्षा है। मानवतार प्रेम और विज्ञान को शिक्षा का मूल आधार बताते हुए विशेषज्ञ ने अपनी बात रखी।

ज्ञान की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए माधव उद्धव प्रसंग पर भी मुख्य वक्ता ने प्रकाश डाला। इस अवसर पर लेखिका ने अपना नवीनतम खंड काव्य माधव मंथन भी महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ वंदना चौहान को भेंट की। कार्यक्रम के अंत में डॉ बाजपेयी का शाल व श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया। इस अवसर पर पूर्णिमा, रेनू मिश्रा, मनीष शुक्ला एवं टीम उपस्थित थे।

बीएड विद्यार्थियों ने रैली निकाल नुक्कड़ नाटक दिखा वोट डालने प्रेरित किया

बीएड के विद्यार्थियों ने मतदाता जागरूकता रैली निकाली।

भाटापारा| कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट के बीएड छात्रों ने मतदाता जागरूकता अभियान के तहत ग्राम पंचायत रोहरा, तरेंगा, सुमा और केसदी में रैली निकाली। मतदान जागरूकता से संबंधित नुक्कड़ नाटक से मतदान देने की जानकारी ग्रामवासियों को दी। इस अवसर पर संस्थान के संचालक मनीष शुक्ला ने कहा कि लोगों को अपने दैनिक जीवन से संबंधित सभी कार्य छोड़कर मतदान डालने जाना चाहिए। रैली में संस्था की प्राचार्य डॉ. वंदना चौहान, सहायक प्राध्यापक स्मृति सिंह, भागवत प्रसाद मिश्रा, नमिता मैती, बिजेश यादव, पूर्णिमा कौशिक, भावना हेंवार, नेहा सिंह, मनीषा साहू, पुष्पा यादव सहित छात्र-छात्राओं ने सहभागिता निभाई।

भुनेश्वरी व सुषमा प्रावीण्य सूची में

भाटापारा. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के द्वारा घोषित प्रावीण्य सूची में बी.एड चतुर्थ सेमेस्टर मई-जून 2019 में भुनेश्वरी वर्मा प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक में चयनित होकर संस्था को गौरवान्वित किया है. साथ ही संस्था की छात्रा सुषमा वर्मा ने पांचवा स्थान प्राप्त प्रावीण्य सूची में प्राप्त कर महाविद्यालय प्रबंधन एवं शिक्षकगण समस्त कर्मचारियों को उत्कृष्ट स्थान प्रदान किया है. रामनारायण शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष मनीष शुक्ला एवं सदस्य महाविद्यालय के प्राचार्य एवं शिक्षकगण पदस्थ कर्मचारियों एवं सभी छात्र-छात्राओं ने दोनों छात्राओं को बधाई एवं उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी है.

देवरी रोड, भाटापारा
खेल सप्ताह

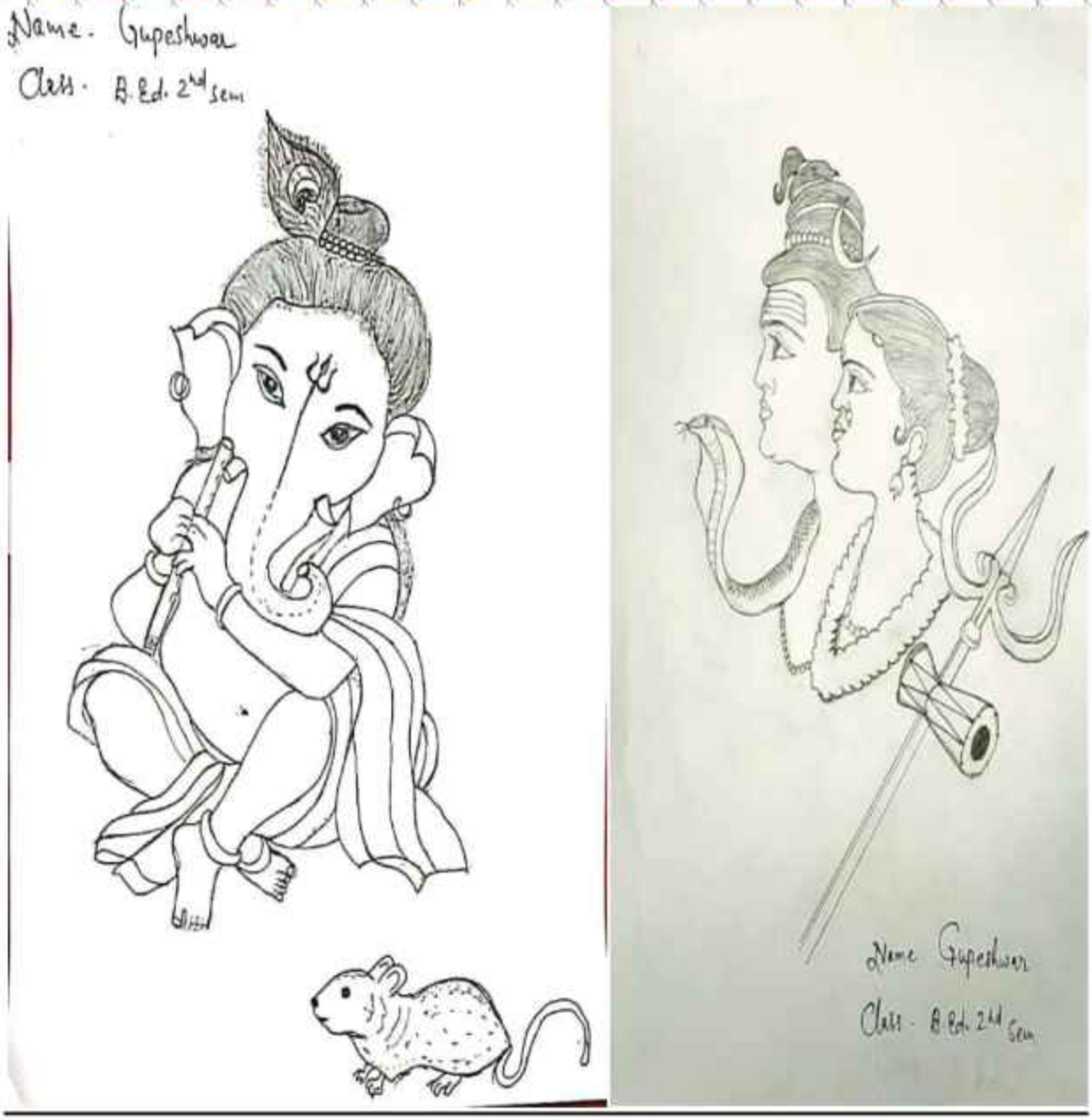

अनुशासन का महत्व

अनुशासन के बिना जीवन निष्क्रिय और बेकार हो जाता है क्योकि योजना के अनुसार कुछ भी नही होता है। अगर हमें किसी भी कार्य को पुरा करने के बारे में सही तरीके से अपनी रणनीति को लागू करना है , तो हमें पहले अनुशासन में रहने की आवश्यकता है । अनुशासन चीजों को आसान बनाता है और हमारे जीवन को सफल बनाता है
अनुशसन हमे बहुत सारे शानदार अवसर देता है आगे बढने का सही तररीका , जीवन में नई चीजें सीखने ,कम समय के भीतर अधिक अनुभव करने आदि । जबकि अनुशासन की कमी से बहुत भ्रम और विकार पैदा होते है
अनुशासनहिनता के कारण जीवन में कोइ शांति और प्रगति नही होती है । इसके बजाय सारी समस्याए पैदा हो जाती है । हमें नियमो का पालन करने , आदेशों का पालन करने और व्यवस्थित तरीके से व्यवहार करने की आवश्यकता है हमें अपने दैनिक जीवन में अनुशासन को महत्व देना चाहिए । वे लोग जो अपने जीवन में अनुशसित नही है उन्हे बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है और उन्हे जीवन में निराशा ही मिलती है !

Smt. Smriti Singh
Asst. Proffessor

एक छोटी–सी प्रेरणादायक कहानी मौका

एक छोटा बच्चा अपने पापा के साथ सुपरमार्केट घुमने आया था , बच्चों को अक्सर खिलौने बहुत पसंद होते है, इसलिए जब उसके पापा उसे खिलौने वाले सेक्शन में लेकर गए तो बच्चा काफी सारे खिलौनों को देखकर बेहद खुश हुआ । फिर उसने अपने पापा से उन सभी खिलौनों में से एक कार खरीदने को कहा । बच्चे की खुशी के लिए उसके पापा ने उसकी मांग पूरी की और उस बच्चे ने वो कार उठा ली ।

वह उस कार को लेकर बहुत खुश था लेकिन जैसे ही वह थोड़ा आगे बढ़ा, उसका ध्यान वहां रखे एक रिमोट कण्ट्रोल हेलीकाप्टर पर आकर्षित हुआ , उसे वह हेलीकाप्टर देखते ही बहुत पसंद आ गया । इसलिए उसने पापा से कहा कि अब उसे कार नहीं चाहिए क्योंकि अब उसे रिमोट कण्ट्रोल हेलीकाप्टर चाहिए था द्य उसके पापा थोड़ी जल्दी में थे, क्योंकि सुपरमार्केट बंद होने वाली थी , तब बच्चे के पापा ने उसे समझाया कि जो भी खिलौना लेना है जल्दी–से ले लो और चलो यहाँ से ।

बच्चे ने कार वापस रखकर हेलीकाप्टर उठा लिया । बच्चा अपने पापा के साथ थोड़ा और आगे बढ़ा ही था कि बच्चे ने फिर से कहा अब उसे वो हेलीकाप्टर नहीं बल्कि विडियो गेम वाला सेट चाहिए । उसके पापा ने कहा अच्छे–से सोच लो और जो लेना है लो क्योंकि अब हमारे पास ज्यादा टाइम नहीं बचा है , बच्चा इधर–उधर भागता हुआ खिलौनों को देख ही रहा था कि सुपरमार्केट की सभी लाइट बंद हो गई और अनाउंसमेंट हुई कि मार्केट अब बंद हो चुकी है ।

शिक्षा :– हम सभी लोग उस बच्चे की तरह है और यह दुनिया एक सुपर मार्केट है, जिसमे बहुत–सारे अलग–अलग प्रकार के खिलौने रखे हुयें है । हमारे पास बहुत सारे खिलौने चुनने के लिए उपलब्ध है द्य लेकिन अगर हम निश्चय ही नहीं करेंगे कि हमें एजुकेशन में क्या करना है, रिलेशनशिप में क्या करना है, जॉब की फील्ड में क्या करना है, या फिर किस तरह का बिजनस करना है । तो हम सब भी आखिर में उस बच्चे की तरह खाली हाथ रह जायेंगे । हम हमेशा गलत निश्चय लेने से डरते है लेकिन यकीन मानिए गलत निश्चय लेना कोई भी निश्चय न लेने से कई ज्यादा अच्छा है । क्या पता समय बीत जाने के बाद हम भी उस बच्चे की तरह पछताते रहें । जब मौका हमारे पास था तो हमने कुछ चुना क्यों नहीं !!

Smt. Purnima Kaushik
Asst. Proffessor

"जिंदगी जी ले जरा...."

जिंदगी जी ले जरा कुछ इस तरह , जीवन एक ऐसी राह है जिस पर कई मोड़ आते है , जो हमे बहुत कुछ सिखा जाते है।
गिर कर उठना उठ कर चलना , चलते–चलते कई ठोकर खाना, उस ठोकर से सम्भल कर आगे बढना,
बढ़ना कैसा...? बढ़ना ऐसा जो पुरानी ठोकर से सीख मिले , चलना ऐसा आस–पास को खुशी मिले,
रहना ऐसा दुसरों को परेशानी ना , हो करना ऐसा दुसरों पर मेहरबानी हो।
छोटी सी जिंदगी मिली है हम को, खुल कर जी ले इस पल को , क्या पता आगे क्या हो जाये जीवन की राह यही पर थम सी जाये।
जिस पल में जी रहे उस पल में आते है कई लम्हें उन लम्हों को संजोकर जी कभी रो – कभी हंस कर जी।
जिंदगी जी ले जरा कुछ इस तरह ।

Bhawana Henwar
Asst. Proffessor

सफल भूमिका

सफल भूमिका जिसका तात्पर्य यह है कि यह जिन बातो पर निर्भर करता है या जिसमें निहित रहता है उसे सार्थक कर देता है।

हमारे समाज में भारतीय संस्कृति को सफल बनाने में धर्म, संस्कृति और राष्ट्रीय एकता एक सफल भूमिका निभाते हैं–

" सफलता का है जो निर्माण है करना धर्म, संस्कृति और राष्ट्रीयता को संग में रखना"सफल भूमिका शीर्षक के बुनियादी आधार स्तम्भ इस प्रकार है जो अपनी–अपनी भूमिका एक सफल समाज में इस प्रकार निभाते है।

≈ धर्म

भारतीय जीवन में सदैव से ही धर्म का विशेष महत्व रहा है कलानार धर्म के संकुचित रूप का प्रचलन हो गया और भारतीय समाज में धर्म के नाम पर
इतने मत मतान्तर प्रचालित हो गये है कि इससे हम भारतीय समाज को विभिन्न रूपों में देख सकते है।

≈ भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र अध्यात्म के आधार पर किया गया है। भारतीय संस्कृति के निर्माता के रूप में ऋषि और मुनियों को माना जाता है।
भारतीय संस्कृति के आधार पर हम अपनी संस्कृति में विविधताओं का दर्शन कर सकते है जैसे–
धर्म, परिवेश, समाज, विवाह संस्कार धार्मिक कर्मकाण्ड ।।

≈ राष्ट्रीय एकता

प्रत्येक राष्ट्र की उन्नति अथवा अवनति इस बात पर निर्भर करती है। कि उसके नागरिको में राष्ट्रीयता की भावना किस सीमा तक विकसित हुई है।
राष्ट्रीय एकता के विकास के रूप में शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक के आधार पर अपनी भूमिका स्पष्ट की है। राष्ट्रीय एकता का विकास शिक्षा के आधार पर ही बुनियादी रूप से किया जा सकता है।
राष्ट्रीय एकता का विकास ही समाज का आधार है शिक्षा के साथ ही इसका सपना साकार है। "

Neha Singh
Asst. Proffessor

प्रसन्नता का रहस्य

एक बार चालीस लोगों का एक प्रतिनिधि मंड़ल एक सेमिनार में वक्ता को सुन रहा था। उस समय वे प्रसन्नता पर बोल रहे थे। तभी वक्ता चुप हो गये और सभी को एक–एक गुब्बारा देते हुए बोले "आप सभी गुब्बारे पर अपना नाम लिख दे" । जब सभी ने नाम लिख दिये तब वक्ता ने सभी गुब्बारे ईक्ट्ठे किये और पास के एक कक्ष में छोड़ आये। इसके बाद उन्होने प्रतिनिधियों से पांच मिनट में अपना नाम लिखा गुब्बारा उठा कर लाने का कहा। देखते ही देखते उस कक्ष में छीना–झपटी, अफरा–तफरी का महौल बन गया। सभी के चेहने पर कठोरता दिखाई दे रही थी। पांच मिनट बीत गये लेकिन कोई भी अपना गुब्बारा नही ढुंढ पाये। अब वक्ता ने उन्हे धर्य और शांति पुर्वक जिस व्यक्ति को, जिसके
नाम का गुब्बारा मिले उसे देने को कहा। एक मिनट के अंदर ही हर व्यक्ति के हाथ में उसका गुब्बारा था। वक्ता ने फिर कहा 'बिलकुल ऐसा ही मनुष्य के जीवन में होता है। हर कोई प्रसन्नता के तलास में इधर से उधर बेचेनी से घुम रहा है। जबकि यह नही जानता की प्रसन्नता मिलेगी कहा? प्रसन्नता दुसरे से छीना झपटी करने से नहीं दुसरों के देने में छीपी रहती है। दुसरे को प्रसन्नता देकर तो देखे आपको खुद प्रसन्नता मिल जाएगी। ढुढने की आवश्यकता ही नही होगी। यही तो मनुष्य जीवन का उदेश्य है'। वहॉ आऐ प्रतिनिधि के चेहरे पर प्रसन्नता झलक रही थी।

Aamna Khanani
Asst. Proffessor

माँ : ईश्वर का भेजा फरिश्ता

एक समय की बात है एक बच्चे का जन्म होने वाला था जन्म से कुछ क्षण पहले उसने : भगवान् से पूछा , मैं इतना छोटा हूँ खुद से कुछ
कर भी नहीं पाता , भला धरती पर मैं कैसे रहूँगा ,
कृपया मुझे अपने पास ही रहने दीजिये ,
मैं कहीं नहीं जाना चाहता ।

भगवान् :– बोले मेरे पास बहुत से फरिश्ते हैं , उन्ही में से
एक मैंने तुम्हारे लिए चुन लिया है वो तुम्हारा ख्याल रखेगा ।
"पर आप मुझे बताइए यहाँ स्वर्ग में मैं कुछ नहीं करता
बस गाता और मुस्कुराता हूँ, मेरे लिए खुश रहने के लिए
इतना ही बहुत है ।
भगवान् :– बोले तुम्हारा फरिश्ता तुम्हारे लिए गायेगा और,
हर रोज तुम्हारे लिए मुस्कुराएगा भी , और तुम उसका प्रेम महसूस करोगे और खुश रहोगे , और जब वहां लोग मुझसे बात करेंगे तो मैं समझूंगा कैसे , मुझे तो उनकी भाषा नहीं आती तुम्हारा फरिश्ता तुमसे सबसे मधुर और प्यारे शब्दों में बात करेगा , ऐसे शब्द जो तुमने यहाँ भी नहीं सुने होंगे , और बड़े धैर्य और सावधानी के साथ तुम्हारा फरिश्ता तुम्हे बोलना भी सीखाएगा , और जब मुझे आपसे बात करनी हो तो मैं क्या करूँगा ?
तुम्हारा फरिश्ता तुम्हे हाथ जोड़ कर प्रार्थना करना सीखाएगा और इस तरह तुम मुझसे बात कर सकोगे , मैंने सुना है कि धरती पर बुरे लोग भी होते हैं उनसे मुझे कौन बचाएगा ? तुम्हारा फरिश्ता तुम्हे बचाएगा , भले ही उसकी अपनी जान पर खतरा क्यों ना आ जाये । लेकिन मैं हमेशा दुखी रहूँगा क्योंकि मैं आपको नहीं देख पाऊंगा''तुम इसकी चिंता मत करो , तुम्हारा फरिश्ता हमेशा तुमसे मेरे बारे में बात करेगा और तुम वापस मेरे पास कैसे आ सकते हो बतायेगा । उस वक्त स्वर्ग में असीम शांति थी पर पृथ्वी से किसी के कराहने की आवाज आ रही थी बच्चा समझ गया कि अब उसे जाना है और उसने रोते–रोते भगवान् से पूछा , हे ईश्वर : अब तो मैं जाने वाला हूँ , कृ पया मुझे उस फरिश्ते का नाम बता दीजिये ,
भगवान् बोले , फरिश्ते के नाम का कोई महत्त्व नहीं है, बस इतना जानो कि तुम उसे "माँ" कह कर पुकारोगे ।।

Smt. Manisha Sahu
Asst. Proffessor

"संगत का असर (कहानी)

एक अध्यापक अपने शिष्य के साथ घुमने जा रह थे रास्ते मे वे अपने शिष्यों को अच्छी संगत की महिमा समझा रहे थे लेकिन शिष्य इसे समझ नही पा रहे थे तभी अध्यापक ने फूलों से भरा एक गुलाब का पौधा देखा, उन्होने एक शिष्य को उस पौधे के नीचें से तत्काल एक का ढेला उठाकर ले आने को कहा , जब शिष्य ढेला उठा लाया तो अध्यापक बोले – इसे अब सुंघो '
शिष्य ने ढेला सुंघा और बोला गुरू जी इसमें से तो गुलाब की बड़ी अच्छी खुशबू आ रही है
तब अध्यापक बोले ' बच्चों जानते हो इस मिट्टी में यह मनमोहक महक कैसे आई ?
दरअसल इस मिट्टी पर गुलाब के फुल टूटकर गिरते रहते है तो मिट्टी में भी गुलाब की महक आने लगी है जो की ये असर संगत का है और जिस प्रकार गुलाब की पंखुड़ियों की संगति के कारण इस मिट्टी में से गुलाब की महक आने लगी उसी प्रकार जो व्यक्ति जैसी संगत में रहता है उसमें वैसे ही गुणदोष आ जाते है ...।।
'संगति का असर कहानी से सीख''
इस शिक्षाप्रद कहानी से सीख मिलती है कि हमें सदैव अपनी संगत अच्छी रखनी चाहिए ...।।

Anupma Umre
Asst. Proffessor

हर समस्या का समाधान है – Every Lock has a key

एक समय की बात है एक व्यक्ति के पास एक गधा था। एक दिन वह गधा गढ्ढे में गिर गया जब बहुत कोशिश करने के बाद भी वह गधा गढ्ढे से बाहर नहीं निकल पाया ,तो उस व्यक्ति ने किया की , इस गधे को यही दफना दिया जाए। और ऐसा सोच कर उस व्यक्ति ने उस गधे के ऊपर मिटटी डालनी शुरू कर दी कुछ देर तो गधा शांत बैठा रहा पर जैसे ही उसके ऊपर ज्यादा बोझ होने लगा तो उसने मिटटी अपने ऊपर से झाड़ दी ,मिटटी के नीचे आने पर गधा मिटटी के ऊपर चढ़ गया। ऐसा कुछ समय करते करते गधा गढ्ढे के ऊपर आ गया और फिर गढ्ढे से बाहर निकल गया।

दोस्तों हमारे पास भी उस गधें की तरह 2 choice होती है

1 – या तो हम समस्या रूपी मिटटी के नीचे दब जाए मतलब कोई भी समस्या आने पर उसी के बारे में सोचते रहे और परेशान होते रहे।

2 – या उस समस्या रूपी मिटटी को सीढ़ी बनाकर ऊपर की तरफ बढ़ें।

दोस्तों जिंदगी में कुछ न कुछ तो होता ही रहता है हमें चाहिए की हर प्रॉब्लम से सीखें और जिंदगी को खुशनुमा बनाए। समस्या तो हर किसी के जीवन में आती हैं पर हमारी सफलता और असफलता इसी बात पर निर्भर करती है की उस प्रॉब्लम को हम प्रबंध कैसे करते हैं। क्या अब्राहम लिंकन , महात्मा गांधी , अब्दुल कलाम , राहूल गांधी आदि इनकी जिंदगी में समस्या नहीं आई ,महान लोगो की सफलता इसी बात पर निर्भर करती है की वो समस्या का समाधान कैसे ढूंढते हैं। सफलता का रहस्य ही यही है की समस्या समाधान ढूंढे। न की समस्या में ही उलझ कर रह जाये।

Himanshu Bajpai
Asst. Proffessor

छात्र राजनीति का गिरता स्तर.....

इस बात से इंकार नही किया जा सकता कि महाविद्यालयों में छात्रों की राजनिति में सक्रिय भागीदारी से न केवल उनके स्वंय विकास होता है बल्कि वे संस्था एवं समाज के संरक्षक भी बनकर उभरते है , देश के कई बड़े सांसद और नेता भी महाविद्यालय की राजनितिक गतिविधीयों से होते हुए आज अपनी एक विशेष पहचान बनाने में सफल हुए है , 'किन्तु जब हम आज की वर्तमान परिस्थितियो

को देखे तो छात्र संगठनो में यह बात स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी है कि वे अपनी शक्ति का दुरूपयोग करने लगें है दो या अधिक छात्र संगठन प्रमुख मुद्दो को छोड़कर अपनी ही राजनितिक लाभ जुड़े मुद्दो पर लड़ते नजर आते है और आरोप – प्रत्यारोप का मामला थमता ही नही !

जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी और जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी हमारे सामने का एक ज्वलंत उदाहरण है।

प्रश्न यह है कि क्या राजनिति केवल विरोधी संगठनो की विचारधाराओं के विरोध में ही होनी चाहिऐ ? अगर ऐसा होने लगे तो जरा सोचिए इस देश की प्रजा–तंत्र का क्या होगा । देशहित जैसे ज्वलंत मुद्दो पर भी छात्र संगठन केवल अपनी विचारधाराओं को थोपने मे लगे होते है मामला यहाँ तक बढ जाता है कि वे एक दुसरे को देशद्रोही जैसे नकारात्मक शब्दों से संबोधित करते है इन सबके पीछे कहीं न कहीं की बड़ी राजनितिक पार्टी की विचारधाराओं का हाथ अप्रत्यक्ष रूप से रहता है ।

राजनिति के इस गिरते स्तर को सुधारने हेतु आज एक सख्त मार्गदर्शिता की आवश्कता है इसके अभाव में नियंत्रणहीन छात्र राजनिति और समाज का पतन ज्यादा दुर नही हैं !

Abdul Kadir
Asst. Proffessor

'परोपकार की ईंट'

बहुत समय पहले की बात है एक विख्यात ऋषि गुरु कुल में बालकों को शिक्षा प्रदान किया करते थे. उनके गुरु कुल में बड़े–बड़े रजा महाराजाओं के पुत्रों से लेकर साधारण परिवार के लड़के भी पढ़ा करते थे।

वर्षों से शिक्षा प्राप्त कर रहे शिष्यों की शिक्षा आज पूर्ण हो रही थी और सभी बड़े उत्साह केसाथ अपने अपने घरों को लौटने की तैयारी कर रहे थे कि तभी ऋषिवर की तेज आवाज सभी के कानों में पड़ी।

"आप सभी मैदान में एकत्रित हो जाएं।" आदेश सुनते ही शिष्यों ने ऐसा ही किया। ऋषिवर बोले , "प्रिय शिष्यों , आज इस गुरुकुल में आपका अंतिम दिन हैं। मैं चाहता हूँ कि यहाँ से प्रस्थान करने से पहले आप सभी एक दौड़ में हिस्सा लें।

यह एक बाधा दौड़ होगी और इसमें आपको कहीं कूदना तो कहीं पानी में दौड़ना होगा और इसके आखिरी हिस्से मे आपको एक अँधेरी सुरंग से भी गुजरना पड़ेगा." तो क्या आप सब तैयार हैं?" हाँ ,हम तैयार हैं ", शिष्य एक स्वर में बोले। दौड़ शुरू हुई , सभी तेजी से भागने लगे , वे तमाम बाधाओं को पार करते हुए अंत में सुरंग के पास पहुंचे. वहाँ बहुत अँधेरा था और उसमे जगह–जगह नुकीले पत्थर भी पड़े थे जिनके चुभने पर असहनीय पीड़ा का अनुभव होता था । सभी असमंजस में पड़ गए , जहाँ अभी तक दौड़ में सभी एक सामान बर्ताव कर रहे थे वही अब सभी अलग–अलग व्यवहार करने लगे। खैर , सभी ने ऐसे–तैसे दौड़ खत्म की और ऋषिवर के मक्ष एकत्रित हुए।

"पुत्रो.....मैं देख रहा हूँ कि कुछ लोगों ने दौड़ बहुत जल्दी पूरी कर ली और कुछ ने बहुत अधिक समय लिया , भला ऐसा क्यों ?", ऋषिवर ने प्रश्न किया।

यह सुनकर एक शिष्य बोला , " गुरुजी , हम सभी लगभग साथ–साथ ही दौड़ रहे थे पर सुरंग में पहुचते ही स्थिति बदल गयी। कोई दुसरे को धक्का देकर आगे निकलने में लगा हुआ था तो कोई संभल–संभल कर आगे बढ़ रहा था । और कुछ तो ऐसे भी थे जो पैरों में चुभ रहे पत्थरों को उठा–उठा कर अपनी जेब में रख ले रहे थे ताकि बाद में आने वाले लोगों को पीड़ा ना सहनी पड़े। इसलिए सबने अलग–अलग समय में दौड़ पूरी की, ठीकहै ! जिन लोगों ने पत्थर उठाये हैं वे आगे आएं और मुझे वो पत्थर दिखाएँ", ऋषिवर ने आदेश दिया– आदेश सुनते ही कुछ शिष्य सामने आये और पत्थर निकालने लगे. पर ये क्या जिन्हे वे पत्थर समझ रहे थे दरअसल वे बहुमूल्य हीरें थे. सभी आश्चर्य में पड़ गए और ऋषिवर की तरफ देखने लगे. "मैं जानता हूँ आप लोग इन हीरों के देखकर आश्चर्य में पड़ गए हैं." ऋषिवरबोले– "दरअसल इन्हे मैंने ही उस सुरंग में डाला था ,और यह दूसरों के विषय में सोचने वालों शिष्यों को मेरा इनाम है। "पुत्रों यह दौड़ जीवन की भागम–भाग को दर्शाती है, जहाँ हर कोई कुछ न कुछ पाने के लिए भाग रहा है. पर अंत मे वही सबसें समृद्ध होता हैं जो इस भागम–भाग में भी दूसरों के बारे में सोचने और उनका भला करने से नहीं चूकता है .अतः यहाँ से जाते –जाते इस बात को गाँठ बाँध लीजिये कि आप अपने जीवन में सफलता की जो इमारत खड़ी करें उसमें परोपकार की ईंटें लगाना कभी ना भूलें , अंततः वही आपकी सबसे अनमोल जमा–पूँजी होगी।

Vaibhav Gupta
Asst. Proffessor

संस्कृति का महत्व

ये मनुष्य बहुत खुश है, क्योंकि ये आजाद हो गया। परन्तु इस मासूम को ये अंदाजा नही कि आजादी के नाम पर इसनें खो क्या दिया है? ऐसी ही आजादी आजकल की युवा पीढ़ी को चाहिये। आजादी अपनी संस्कृति से, संस्कारों से और अपने बड़ों से। हमारी संस्कृति और संस्कार बोझ नहीं बल्कि हमारा सुरक्षा कवच है।

Sushma Dubey
Asst. Proffessor

अहंकार

अहंकार का मद अधिक देर तक नहीं टिकता। बहुत शीघ्र ही इसके परिणाम सामने आते हैं। एक दिन हवा जोर से चलने लगी। धरती की धूल उड़–उड़कर आसमान पर छा गई। धरती से उठकर आकाश पर पहुंच जाने पर धूल को बड़ा गर्व हो गया। वह सहसा कह उठी– आज मेरे समान कोई भी ऊंचा नही। जल, थल, नभ, के साथ दसों दिशाओं में मैं–ही–मैं व्याप्त हूं।

बादल ने धूल की गर्वोक्ति सुनी। उसने धूल की भूल पर थोड़ा अट्टहास किया और अपनी धारांए खोल दीं। देखते ही देखते धूल आसमान से उतरकर जमीन पर पानी के साथ बहती दिखलाई देने लगी, दिशाएँ साफ हो गई। कहीं भी धूल का नामोनिशान न रहा। पानी के साथ बहती हुई धूल से धरती ने पूछा – तुमने अपने उत्थान पतन से क्या सीखा ?

धूल ने कहा – "धरती माता मैंने सीखा कि उन्नति पाकर किसी को गर्व नहीं करना चाहिए। गर्व करने वाले मनुष्य का पतन अवश्य होता हैं।"

Gulshan Kumar Gendle
Librarian

गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागु पाये।
बलिहारी गुरु आपकी गोविंद दियो बताये।

यह श्लोक भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को तब बताया था जब अर्जुन एक स्वयंवर में गये थे और वहां उन्हे गुरु और भगवान दोनों एक साथ मिले और वे चकित थे कि पहले किनका चरण स्पर्श करु? तब श्री कृष्ण ने गुरु को सबसे बड़ा बताया क्योंकि एक गुरु या शिक्षक ही एक जीवित भगवान है, जो इतिहास में वर्तमान तक बिना लोभ स्वार्थ भाव के हमें शिक्षा देते हैं। तथा हमें सही मार्ग बताते हैं। शिष्य या छात्र की गलती को नजर अंदाज करके हमें राह दिखाते हैं। मां–बाप भी अपने बच्चों को सामान्य नजरों से नहीं देखते लेकिन गुरु सबको एक समान नज़र से देखते हैं। सब सामान्य होते हैं। वो हमारे क्रिया को देखते हुए हमें हमारे ही अनुसार अपने आप को ढाल के हमें मार्ग दर्शन कराते हैं और हमेशा भगवान से हमारी तरक्की के लिए प्रार्थना करते हैं। उनके डांट और फटकार में भी प्यार छिपा होता है। और जब हम अपने मंजिल में पहुंचते हैं या तरक्की करते हैं। तो वो हमारे तरक्की को अपना गुरु दक्षिणा समझते हैं। हम कामयाब होने के बाद उन्हे भूल जाते हैं। लेकिन वो हमें अपने प्यार में याद रखते हैं। इसलिए गुरु या शिक्षक को भगवान माना जाता है। और उनकी पूजा की जाती है। जो यह श्लोक में प्रमाणित हैं।

गुरु ब्रम्हा गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वराः
गुरु साक्षात् परम ब्रम्ह तस्मै श्री गुरवे नमः

Morajdhwaj Jaiswal
Clerck

चेहरा चाहे कितना भी सुन्दर हो अगर जुबान कड़वा हो तो लोग मुंह फेर लेते हैं क्योंकि जुबान की सुंदरता चेहरे की सुंदरता चेहरे की सुंदरता से कहीं बढ़कर हैं

एक बेहतरीन इंसान अपनी जुबान और कर्मों से पहचाना जाता है वरना अच्छी बातें तो दिवारों पर भी लिखी जाती है।

सेल्फी नही पर कभी किसी का दर्द खींच सको तो कोशिश करना दुनिया तो क्या खुद ईश्वर भी उस तस्वीर को लाईक करेंगें।

पानी से भरे बादल और फले–फूले वृक्ष हमेंशा नीचे की ओर झुके रहते हैं सज्जन मनुष्य भी इन्हीं के भांति धन एवं ज्ञान की प्राप्ति के बाद विनम्र बने रहते हैं।

Goukaran Yadav
Clerck

सकारात्मक विचारों की शक्ति

हमें सकारात्मक विचार देने चाहिए । नकारात्मक विचार मनुष्य को दुर्बल बनाते हैं क्या आपने यह नही देखा है कि जहाँ माता–पिता अपने बच्चों को पढने–लिखने तथा यह कहकर कि वे कुछ नही सीख सकेंगे , यहाँ तक कि उन्हे मूर्ख की संज्ञा भी दे देते है वे बच्चे अधिकांश मामलों में अपने को वैसा ही बना लेते है , यदि आप उन्हें भले शब्दों से सम्बोधित करते है तथा प्रोत्साहन देते है तो वे कालक्रमानुसार अवश्य सुधर जाते है , यदि आप उनमे सकारात्मक विचार भरते है तो वे स्वालंबी बनकर आगे प्रगति करते है भाषा हो या साहित्य , कविता हो या कला इन सभी में हमें अन्य की त्रुटियॉ जो वे अपने विचारों एवं कार्यो द्वारा प्रकट करते है इसके विपरीत उन्हे यह बताना चाहिए कि वे इन चीजों तथा कार्यो को और बेहतर ढंग से कर सकते है ।

"कार्य मे आनंद आने से कार्य में परिपूर्णता आती है "।

"आपका संघर्ष लक्ष्य और उत्साह ही आपको चैम्पियन बनाते है" ।

Mukesh Kumar
B.Ed. 2nd Year

एक कविता हर माँ के नाम

घुटनों मे रेंगते रेंगते ,
कब पैरों पर खड़ा हुआ,
तेरी ममता की छाँव में ,
जाने कब बड़ा हुआ...
काला टीका दुध मलाई ,
आज भी सब कुछ वैसा है
मैं ही मैं हूँ हर जगह ,
मा प्यार ये तेरा कैसा है
सीधा सीधा भोला भाला ,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ
कितना भी हो जाउ बड़ा ,
माँ मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ

Tikeshwari
B.Ed. 2nd Year

बिटियाँ

बाबा की रानी हूँ ,आँखो का पानी है
बह जाना है जिसे दो पल कहानी हूँ
अम्मा की बिटियाँ हूँ
आंगन की मिट्टिया हूँ
टुक टुक निहारे वो , परदेसी चिट्ठियाँ हूँ

Sangita Banjare
B.Ed. 2nd Year

गंगा नदी के पानी का महत्व

एक समय की बात है बादशाह अकबर का दरबार बनेक दरबारियों से भरा हुआ था बादशाह अकबर अपने दरबारियों से एक सवाल करता है कि किस नदी का पानी सबसे अच्छा है सभी दरबारियों ने एक मत से उत्तर दिया और कहा कि – गंगा नदी का पानी सबसे अच्छा होता है,

सभी दरबारियों ने एक मत से उत्तर दिया लेकिन बीरबल चुप बैठा हुआ था बीरबल को चुप बैठा हुआ देखकर बादशाह को हैरानी हुआ ।बादशाह अकबर बीरबल से पूछता है – तुम क्यों चुप बैठे हो ? तब बीरबल जवाब देता है कि हुजुर सबसे अच्छा जमुना नदी का पानी होता है

बीरबल के इस जवाब को सुनकर बादशाह को फिर हैरानी हुआ ,वह बीरबल से पुछता है कि तुम ऐसा किस आधार पर कह रहे हो ? जबकि तुम्हारे हिंदु धर्म ग्रंथो एवं पुराणो में तो गंगा नदी के पानी को सबसे शुध्द व पवित्र माना जाता है

बादशाह के ऐसा कहने पर बीरबल कहता है – हुजुर मैं अमृत की तुलना पानी से नही कर सकता ' गंगा मे बहने वाला पानी केवल पानी नही है वह अमृत तुल्य है जो मनुष्यों के पाप को धोता है इसलिए मैने जमुना नदी के पानी को सबसे अच्छा कहा है ।

बीरबल के इस जवाब को सुनकर बादशाह सहित सभी दरबारी निरूत्तर हो गये , और उन्हे मानना पड़ा कि बीरबल सही कह रहे है।

इस कहानी के माध्यम से बीरबल ने गंगा तथा उसमें बहने वाले पानी के महत्व को बताया है।

Gupeshwar
B.Ed. 2nd Year

घर से दूर नौकरी करने वालो को समर्पित

घर जाता हूँ तो मेरा ही बैग मुझे चिढ़ाता हैं
मेहमान हूँ अब ,ये पल–पल मुझे बताता हैं
माँ कहती है सामान बैग मे फौरन डालो ,
हर बार तुम्हारा कुछ ना कुछ छुट जाता हैं !!

घर पहुँचने से पहले ही लौटने का टिकट ,
वक्त परिंदे सा उड़ता जाता हैं ....

उंगलियों पर ले कर जाता हूँ गिनती के दिन ,
फिसलते हुए जाने का दिन पास आ जाता है.....!!

अब कब होगा आना सबका पूछना ,
ये उदास सवाल भीतर तक बिखलाता हैं ....
घर से दरवाजे से निकलने तक,
बैग में कुछ ना कुछ भरते जाता हैं .....!!

ट्रेन में मां के हाथों की बनी रोटियां ,
रोती हुयी आंखो में धुंधला जाता हैं ....
लौटते वक्त वजनी हुआ बैग ,
सीट के नीचें पड़ा खुद उदास हो जाता है ....!!

तू एक मेहमान हैं अब ये पल मुझे बताता है .....
आज भी मेरा घर मुझे वाकई बहुत याद आता हैं.....!!

Savan Dhruw
B.Ed. 2nd Year

बेटी बचाओं– बेटी पढाओं

मत मारो तुम कोख में इसको ,
इसे सुंदर जग में आने दो ,
छोड़ो तुम अपनी सोंच पुरानी ,
इक माँ को खुषी मनाने दो ,
बेटी के आने पर अब तुम ,
घी के दिये जलाओ ,
आज से संदेष पूरे जग में फैलाओं
बेटी बचाओं– बेटी पढाओं ।

Moni
B.Ed. 2nd Year

''सूविचार''

जिंदगी खेलती भी उसी के साथ हैं,
जो खिलाडी बेहतरीन होता है ,,!
दर्द सबके एक से हैं ,
मगर हौसलें सबके अलग–अलग है
कोई हताश हो के बिखर जाता हैं
तो कोई संघर्ष करके निखर जाता है,,,!!

Mamta Verma
B.Ed. 2nd Year

''माँ–पिता''

माँ एक ऐसा बैंक है जिसमें हम अपने सारी दूख एवं भावनाओं को जमा कर सकते हैं ,।
पिता एक ऐसा क्रेडिट कार्ड हैं जो बैलेंस न होते हुए भी हमारे सपनो को पूरा करते है...।।

Anita Yadu
B.Ed. 2nd Year

''सूविचार''

ईश्वर वो नही देता जो आपको अच्छा लगता हैं बल्कि वो देता हैं जो आपके लिए अच्छा होता हैं !
शिक्षक और सड़क दोनो एक जैसे होते है, 'खुद'जहॉ है वही पर रहते है, मगर दुसरों को उनकी मजिंल तक पहुँचा देते हैं !
देने के लिए दान , लेने के लिए ज्ञान और त्यागने के लिऐ अभिमान सर्वश्रेष्ठ होता हैं!

Chameli Soni
B.Ed. 2nd Year

"..लघु कथा.."

एक स्कुल का लड़का बर्तन से पुरी तरह पोछ कर खाना खाने वाले एक बालक के दोस्त उसका रोज मजाक उड़ाता हैं !
एक ने उसे पुछा – तुम रोजना बर्तन में एक कण भी क्यों नही छोड़ते ?
बालक बोला इसके तीन कारण हैं ....
यह मेरे पिता के प्रति आदर हैं , जो इस भोजन को मेहनत से कमाऐ रूपयों से खरीद कर लाते हैं !
ऐ मेरी माँ के प्रति आदर हैं जो सुबह जल्दी उठकर बड़े चाव से इसे पकाती हैं !
यह आदर मेरे देश के उन किसानों के प्रति है जो खेतों मे भुखे रहकर बड़ी मेहनत से इसे पैदा करते है ,
इसलिए थाली में झुठा छोड़ना अपनी शानन समझें
खाना खाओ मनभर –न छोड़ो कलभर
उतना ही ले थाली में , व्यर्थ ना जाए नाली में !!

Santosh
B.Ed. 2nd Year

"सच्ची शिक्षा"

" शिक्षा का अर्थ हमारे मस्तिष्क में रखी पुस्तकीय जानकारियों का ढेर ही नही हैं , वरन् अपने विचारों एवं व्यावहारों में नया–पन लाना है तथा शिक्षा से हम अपना जीवन–निर्माण कर सके ,सच्चा मनुष्य बन सके, चरित्र गठन कर सके और विचारों का सामंजस्य कर सके वही वास्तव में शिक्षा कहलाये जाने योग्य हैं ! यदि आप केवल पॉच सद विचारों या व्यवहारों को अपने व्यवहारिक जीवन में आत्मसात कर लेते हो तो तुम्हारी शिक्षा उस व्यक्ति की अपेक्षा बहुत अधिक है , जिसने पुरे ग्रंथालय को कण्ठस्य कर लिया है !
यदि तरह–तरह की सूचनाएँ एकत्र करना ही शिक्षा है तब ग्रंथालय ही विश्व के श्रेष्ठ ज्ञानी एवं विश्वकोष ही महान ऋषि होते !!"

" अध्ययन का उद्देश्य रिक्त मस्तिष्क की जगह खुले मस्तिष्क का निर्माण करना है ! "

"ज्ञान पाने के लिए पढना चाहिए और बुध्दिमता के लिए स्व–आकलन करना चाहिए !"

Kamlesh Kumar Sen
B.Ed. 2nd Year

"सूविचार"

जिस इंसान में अच्छे विचार एवं अच्छे संस्कारो की पकड़ होती हैं ,
उस हाथ में "माला" पकड़ने की जरूरत नही पडती !!
" अकाल " हो अगर "अनाज " का तब मानव मरता हैं ... किन्तु
" अकाल " को अगर "संस्कारो" का तो मानवता मरती हैं ....!!

"संस्कारो" से बड़ी कोई "वसीयत"नही , और " ईमानदारी " से बड़ी कोई " विरासत " नही .....!!

Sarojani Verma
B.Ed. 2nd Year

" जीतने वाला लाभ देखता हैं और हारने वाला अपना दर्द देखता हैं।"

Ramti Nishad
B.Ed. 2nd Year

अगर शहद जैसा मीठा परिणाम चाहिये तो , मधुमक्खियों की तरह एक रहना जरूरी हैं, चाहे वो दोस्ती हो ,परिवार हो , या अपना मुल्क हो .....

Manisha Gahre
B.Ed. 2nd Year

नवाँ खेती .....

वाह रे ! मोर आधुनिक युग
तोर देखे सबो जिनिस नंदा गे
पहली नांगर बइला म धान बोवय
वहु ह पिछवा गे , अउ ट्रैक्टर अघवा गे
वाह रे ! मोर आधुनिक युग
तोर देखे सबो जिनिस नंदा गे
आघु घुरवा के खातु–कचरा म धान बाढय
अब यूरिया पोटास अउ डीएपी मन भागे
वाह रे ! मोर आधुनिक युग
तोर देखे सबो जिनिस नंदा गे
ट्रैक्टर के बोवाय ले , मेढ घलो अधियागे
ओकर देखे सबो पेड़ घलो सुखा गे
वाह रे ! मोर आधुनिक युग
तोर देखे सबो जिनिस नंदा गे
बीमारी ले बचाय पर आघु ले दवा ल तो डारे
पर अपन बर बीमारी ल बढा डारे
वाह रे ! मोर आधुनिक युग
तोर देखे सबो जिनिस नंदा गे

Varsha
B.Ed. 2nd Year

•दीपमाला•

दीप जल उठा उत्तेजना की लय में , पलके झपक रही अपलक
नयनों की शैया पर लेटे , खिल उठा अंगारे की बुँद
सजी त्रिपुलक मृदु चुंबन सी लिपटी फव्वारों की शय में
दीप जल उठा उत्तेजना की लय में..... ।।

शहस्त्रों का लेकर यौवन अंगिड़ी सी रंग की छाप
सिंहरन की अंगड़ाइयों में चहक उड़ी अंगी कचनार
वह जल उठा फिर से इक बार ..... ।।

मन कर पावन यौवन का कोना , धधक उठी ज्वाला सी बनकर
सुन सुरीली मीठी तान , करता फिर इक बार शंखनाद
वह जल उठा फिर से इक बार ..... ।।

Twinkal Verma
B.Ed. 2nd Year

"सूविचार"

अपनी किसी बात पर गुरूर मत करना वक्त का कोई भरोसा नही ...
वक्त नूर को भी बेनूर बना देता है, वक्त फकीर को भी हुजूर बना देता है,
वक्त कोयले को भी कोहिनूर बना देता है,
कुण्डली में शनि और दिमाग में मनी और जीवन में दुश्मनी तीनों हानिकारक हैं , बदला लेने में क्या मजा है? मजा तो तब आता है जब आप सामने वाले को ही बदल दो ।।

Madhu Manikpuri
B.Ed. 2nd Year

"नेता"

जिसकी तलाश थी वो कभी मिला ही नहीं जिसकी मांग थी वो कभी हमे दिया ही नही। फिर भी वह करे हमने बहुत कुछ किया है। आप ही बताओं नेताओं ने भाषण बातो के शिवा कुछ दिया है। भाषण और वादों की सरकार जुमलों में सिमट गयी हमारे नेता जी हमपे इस कदर एहसान करते है।

पहले तो ऑखे छिन लेती है फिर बाद मे चश्मा दान करती है। फिर इस चश्मे का बखान करती है। सारे विकासित कार्य अपने नाम करती है। और बाकी जनता की परेशानियॉ विपक्ष के नाम करती है। जनता को गुम असल मुददों से भटकाती है। खुद की कमियों को नजरअंदाज कर बस अपने ही गुणों को बखान करती है। वो करते है तो सब चमत्कार है, विपक्ष अगर रोटी भी दे तो इसमें भी भ्रष्टार है।

जितना मजा लेना है ले लो
तुझे जनता सिर मे बिठा सकती है
तो गिरा भी सकती है
अच्छा होगा जनता की बदौलत हो जनता के ही रहो
नेताओं की जय सब कहे ,
सब जनता की जय हो ।।

Tekeshwari Sahu
B.Ed. 2nd Year

.....हिन्दू विचार और वेशभुषा.....

मनुष्य जिन विचारों और संस्कारों के बीच पलकर बड़ा होता है ,वैसा ही उसका व्यवहार ,खानपान और वेशभुषा भी हो जाती है ।

एक सन्यासी विदेश प्रवास पर गये , वहॉ एक व्यक्ति ने उनसे कहा कि आप हिन्दू लोग कैसी ढीली –ढाली धोती पहनते हो ? यदि कही मारपीट हो गयी तो न लड़ सकोगे और न भाग सकोगे ।

सन्यासी ने हॅसकर कहा हम भारतीय सोंचते है कि दुनिया में सब लोग हमारे जैसे ही सज्जन और सभ्य है , इसलिए लड़ाई और मारपीट का विचार हमारे मन में नही आता ।

दुसरी ओर तुम हर समय इसके बारे मे ही सोंचते ही रहते हो , इसलिए वैसी ही तुम्हारी वेशभुषा है और हिंसक पशुओं जैसा खानपान ।

सदैव प्रसन्न रहिये , जो प्राप्त है – पर्याप्त हैं

Saraswati Dhruw
B.Ed. 2nd Year

...सफाई ...

प्लास्टिक का आप करें त्याग , इससे सबका होगा कल्याण
यात्रा का आप पुष्प कमा ले , कुड़ा सिर्फ कुड़ेदान में डाले
यात्री तेरी धन्य कमाई , रास्ते की रख पुरी सफाई
धरती माता करे पुकार , आस पास करो सुधार
हेमकुट की यात्रा पर आया जो इंसान
रास्ते की सफाई का करे वो ध्यान
सुनो आप क्या कहती आत्मा , कुड़े कचरे का करो खात्मा
धरती पानी हवा रखो साफ आने वाली पीढियां करेगी माफ।।

Tikeshwari
B.Ed. 2nd Year

''सूविचार''

वक्त से लड़कर , वो नसीब बदल दे
इन्सान वही जो , अपनी तकदीर बदल दे
कल क्या होगा , कभी मत सोचों
क्या पता कल वक्त खुद तस्वीर बदल दे ।

Shweta Markandey
B.Ed. 2nd Year

गीत नया गाता हूँ

टुटे हुए तारों से कूटे बासंती स्वर
पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर
झरे सब पीले पात कोयल की कुहुक रात
प्राची में अरूणिम की रेख देख पाता हूँ
गीत नया गाता हूँ

टुटे हुऐ सपनों की कौन सुने सिसकी
अन्तर की चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी
हार नही मानूंगा , रार नही ठानूंगा
काल के कपाल पे लिखता मिटाता हूँ
गीत नया गाता हूँ

Ritesh Kumar Verma
B.Ed. 2nd Year

•''सु–प्रभात''•

अज्ञात कालिमा धारण किये , जगत में कौन ? लेखाकार...,
अंधेड़ कालिमा में बार–बार , उजड़ता उफनता हर रोज
दीपक में उठ–उठ लौं की धार , आसीम पवन में बह धुँआधार।
अरूण दृश्य पावन का देख , मन शक्ति पिड़ित निश्चेत
उपवन क्यूँ जलता हैं तार–तार , पात झरे क्यूँ निज प्रभात ।।
हँसता –खेलता ठिठोलियॉ बीच , बिखेर रश्मियों को लपेट
छिपता–फिरता मुर्तिशान
देख आया प्रभात ।।

Yamini Sahu
B.Ed. 2nd Year

''सूविचार''

माना कि आप किसी का भाग्य नही बदल सकते ।
लेकिन अच्छी प्रेरणा देकर किसी का मार्ग दर्शन तो कर सकते है भगवान कहते है जीवन में कभी मौका मिले तो श्रीकृष्ण जी की तरह सार्थी जरूर बनना , स्वार्थी नही ।।

Ajit Kumar
B.Ed. 2nd Year

सूविचार''

पैर को लगने वाली चोट संभल कर चलना सिखाती हैं , और मन को लगने वाली चोट समझदारी से जीना सिखाती है

Domesh Sahu
B.Ed. 2nd Year

एक दीपक शहीदों के नाम

कर दिया जिसने हँसते हँसते , घर का चिराग देश के नाम
एक दीपक तो जलाओ यारों ।
उस माँ के भी नाम , उजाले बिखेरी हर दिशा
दीपक जलाओं उसकी शान ,
जिसने किया अपना सिंदुर विदा देश के मान में ।
आंगन करो रोशन , बत्तियों की लौं बढाओ
उस बच्चें के त्याग में , लौटे जिसके पिता लिपट के तिरंगे में।
दीवाली है त्यौहार अपनों का , तो नजर संग आओ उनके
हो गए अपने शहीद जिनके देश का अभिमान रखने में ।
आईए इस दिवाली एक दीपक जलाऐ उनके लिए जिन्होनें अपने किए कुर्बानी देश के नाम ।

Dharika
B.Ed. 2nd Year

वोटर और मंत्री

एक वोटर ने किया मंत्री जी को फोन। मंत्री बोले हैल्लो कौन ?

वोटर : हम वही है जिसने आपको वोट दिया था।

मंत्री : तो उसके बदले में 2000 का नोट दिया था।

वोटर : अरे विधायक जी हम वही है जिसने पूरे परिवार की वोट दिलाई थी।

मंत्री : उसके बदले में भर पेट शराब पिलाई थी।

वोटर : हम वही है जिसने आपके समर्थन में हाथ हिलाया था।

मंत्री : तो कौन सी बड़ी बात है उसके बदले में भर पेट मुर्गा खिलाया था।

वोटर : ऐसा मत करो आपने वादा किया था नौकरी दिलाने का

मंत्री : बेटा इंतज़ार करो समय आने का

वोटर : विधायक जी हमारे क्षेत्र में बिजली नहीं है। पानी नहीं है।

मंत्री : ये ता हमारी परेशानी नहीं हैं।

वोटर : आपने तो कहा था गरीबी से उबार देंगे।

मंत्री : बकबक मत करो नही तो हमारे गुण्डे तुम्हे भी मार देंगे।

वोटर : आप ऐसा नही कर सकते हैं, आप अकेले नही थे। आपके साथ सफेद कुर्ता पजामा वाले की पूरी टीम थी।

मंत्री : बेटा ये तो हमारी पुरानी स्कीम थी।

वोटर : झूठ मत बोलो आपके हाथ में पवित्र झण्डा था।

मंत्री : बेवकूफ वो तो बाप दादे का हथकण्डा था ऐसा वो भी करते आए हैं।

वोटर : आप झूठ कैसे बोल सकते हैं। मैं अकेला नहीं था जनता मेरे साथ थी

मंत्री : वो तो चुनाव के पहले की बात थी।

वोटर : ऐसे में हम क्या करें।

मंत्री : जैसा पूरे देश मरता है वैसे आप भी मरें।

वोटर : नेता जी, खबरदार मेरे दिमाग की नसें हिल चुकी हैं।

मंत्री : तो क्या कर लोगे कुर्सी तो मिल चुकी है।

Titiksha
B.Ed. 2nd Year